2 फरवरी 2017, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के
व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 39, अंक : 21 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
फरवरी (प्रथम), 2017 (वीर नि. संवत्-2543) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय की वार्षिक -

साहित्यिक व खेलकूद प्रतियोगिताऐं सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल महाविद्यालय में प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु महाविद्यालय द्वारा दिनाँक 3 जनवरी से 10 जनवरी 2017 तक विभिन्न साहित्यिक प्रतियोगितायें सम्पन्न हुई। दिनांक 3 जनवरी को रात्रि प्रवचनोपरान्त श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल द्वारा प्रतियोगिताओं का उद्घाटन हुआ।

दिनांक 3 जनवरी को रात्रि में **संस्कृत संभाषण प्रतियोगिता** में ऋषभ जैन ने प्रथम एवं चर्चित जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. श्रीयांसजी सिंघई एवं निर्णायक श्री दिनेशजी यादव व श्री रामकुमारजी शर्मा थे। संचालन संदीप जैन व शुभम मड़ावरा ने किया।

दिनांक 4 जनवरी को रात्रि में **उपाध्याय वर्ग की तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता में** आप्त जैन ने प्रथम एवं पवित्र जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पण्डित संजयजी सेठी ने की। निर्णायक पण्डित प्रमोदजी शास्त्री, पण्डित प्रदीपजी शास्त्री टीकमगढ एवं डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर थे। संचालन अनुभव जैन भिण्ड व सौरभ जैन ने किया।

दिनांक 5 जनवरी को प्रातः **अंग्रेजी भाषण प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान ऋषभ जैन एवं द्वितीय स्थान मंथन जैन ने प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री आर.पी.गर्ग एवं निर्णायक गुंजा पाटनी एवं प्रतीति पाटील थीं। संचालन अरिहंत जैन व स्वप्निल जैन ने किया।

दिनांक 5 जनवरी को रात्रि में 'धर्म परम्परा नहीं प्रयोग है' विषय पर आयोजित **भाषण प्रतियोगिता (शास्त्री वर्ग)** में जिनेन्द्र जैन ने प्रथम एवं कीर्तिकुमार जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने की। निर्णायक पण्डित संजयजी दौसा एवं श्री सौमित्र आजाद थे। संचालन जिनेन्द्र जैन व प्रशान्त जैन ने किया।

दिनांक 6 जनवरी को रात्रि में 'आखिर क्यों जानें जैनधर्म' विषय पर आयोजित **भाषण प्रतियोगिता (उपाध्याय वर्ग)** में अरिहंत जैन (उपा.वरि.) व अंकुर जैन (उपा.कनि.) ने प्रथम एवं सम्मेद खोत ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पण्डित संजीवजी शास्त्री खड़ैरी ने की। निर्णायक के रूप में पण्डित अनिलजी शास्त्री खनियांधाना एवं पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल उपस्थित थे। संचालन दीपक जैन व शुभम जैन भिण्ड ने किया।

दिनांक 7 जनवरी को रात्रि में **अंत्याक्षरी प्रतियोगिता** के अन्तर्गत चर्चित जैन व समकित जैन ने प्रथम तथा शुभांशु जैन कोटा व मधुर जैन सागर ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष पण्डित संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा थे। निर्णायक श्रीमती ज्योति सेठी थी। संचालन विजय जैन व वैभव जैन ने किया।

दिनांक 8 जनवरी को प्रातः **छंदपाठ प्रतियोगिता** में चर्चित जैन प्रथम एवं ऋषभ जैन द्वितीय स्थान पर रहे। कार्यक्रम के अध्यक्ष पण्डित अरुणजी बण्ड तथा निर्णायक श्रीधरजी मिश्र एवं कृष्णदेवजी शुक्ल थे। प्रतियोगिता का संचालन अर्पित जैन एवं रमन जैन ने किया।

दिनांक 8 जनवरी को रात्रि में **शास्त्री वर्ग की तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता** में ऋषभ जैन ने प्रथम एवं अमन जैन व रमन जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने की तथा निर्णायक के रूप में डॉ. संजीवकुमारजी गोधा व पण्डित पीयूषजी शास्त्री उपस्थित थे। संचालन अमित जैन व वर्धमान जैन ने किया।

दिनांक 9 जनवरी को रात्रि में **भजन प्रतियोगिता** के अन्तर्गत अनेकान्त जैन ने प्रथम एवं विकेश जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती कनकप्रभा हाडा ने की। निर्णायक श्री गौरवजी सौगानी व श्री राजकुमारजी संघी थे। संचालन आकाश जैन एवं प्रबल जैन ने किया।

दिनांक 10 जनवरी को रात्रि में **काव्यपाठ प्रतियोगिता** के अन्तर्गत पीयूष जैन ने प्रथम एवं अमित जैन व अनुभव जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सुरेन्द्रजी दुबे ने की। निर्णायक श्री नवलकिशोरजी दुबे एवं पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल थे। संचालन पीयूष जैन व सिद्धार्थ जैन ने किया।

इसी क्रम में दिनांक 25 से 30 दिसम्बर 2016 तक खेलकूद प्रतियोगिताओं का भी आयोजन हुआ।

बॉलीवॉल प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर शास्त्री द्वितीय-तृतीय वर्ष की ध्रुव टीम तथा द्वितीय स्थान पर उपाध्याय वरिष्ठ की जयगोमटेश टीम रही। **कबड्डी प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान पर उपाध्याय वरिष्ठ एवं द्वितीय

(शेष पृष्ठ 8 पर ...)

सम्पादकीय –

संस्कारों का महत्व

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि –''बालक का मस्तिष्क एक ऐसा कोरा कागज है, जिस पर जो भी सही या गलत प्रारम्भ में लिख दिया जाता है, वह अपनी ऐसी अमिट छाप छोड़ता है कि फिर उसे न तो आसानी से मिटाया जा सकता है, न बदला जा सकता है। बालक को जो प्रारम्भिक जीवन में सिखा दिया जाता है, उसका सरल हृदय उसे ही सच मान लेता है।''

संभवत: इसी तथ्य को ध्यान में रखकर हमारे बुजुर्गों ने बालकों की शिक्षा का प्रारम्भ 'ओम् नम: सिद्धं' से करने का निर्णय लिया होगा। सिद्ध परमात्मा को स्मरण करके बालकों को आध्यात्मिक विद्या सिखाते होंगे। पैंतालीस दिन के बालक को मंदिर में ले जाकर णमोकार महामंत्र सुनाने की परम्परा तो आज भी प्रचलित है।

प्रो. ज्ञान के दादाश्री इस बाल मनोविज्ञान से सुपरिचित थे। अत: उन्होंने अपने पोते ज्ञान को अन्य लौकिक विषय सिखाने-पढाने के पूर्व तत्त्वज्ञान ही सिखाया था। इसकारण दोनों के सोचने के तरीके में जमीन-आसमान का अन्तर आ गया है। एक ही प्रश्न के दोनों के भिन्न-भिन्न उत्तर होते थे। ज्ञान हर बात को तात्विक दृष्टि से सोचता था, उसके सोच में तत्त्वज्ञान झलकता था और विज्ञान सदैव भौतिक दृष्टि से सोचता था।

गत तीन माह से ये ज्ञान और विज्ञान दोनों ही नियमित रूप से उपवन में आचार्यश्री का प्रवचन सुनने पहुँच रहे थे। इसकारण आचार्यश्री इनके आचार-विचार और व्यवहार से तो भलीभांति परिचित हो चुके थे, पर वे चाहते थे कि अन्य लोग भी धार्मिक संस्कारों से होने वाले लाभ तथा संस्कारहीन बालकों की दुर्दशा को जाने और तत्त्वज्ञान के महत्व को पहचाने। एतदर्थ उन्होंने ज्ञान और विज्ञान के संस्कारों के अन्तर को स्पष्ट करने के उद्देश्य से उनसे कुछ प्रश्नोत्तर करने का विचार किया।

एक दिन जब आचार्यश्री ने ज्ञान व विज्ञान को प्रवचन मंडप के सामने बैठा देखा तो उनके माध्यम से सम्पूर्ण धर्मसभा को तत्त्वज्ञान और संस्कारों की उपयोगिता समझाने के उद्देश्य से विज्ञान की ओर हाथ का इशारा करते हुए पूछा –''बताओ तुम कौन हो और तुम्हारा क्या नाम है ? तुम कहाँ रहते हो और तुम्हारा क्या काम है ?''

विज्ञान ने अपने भौतिक चिंतन के अनुसार उत्तर दिया –''मैं जैन हूँ, विज्ञान मेरा नाम है, दिल्ली रहता हूँ और पढना-लिखना तथा वैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा नये-नये आविष्कार करना मेरा काम है।''

आचार्यश्री ने यही प्रश्न पुन: ज्ञान की ओर हाथ का इशारा करते हुए पूछा –''तुम बताओ भाई ! तुम कौन हो और तुम्हारा क्या नाम है ? तुम कहाँ रहते हो और तुम्हारा क्या काम है ?

ज्ञान ने अपने तात्विक चिंतन के आधार पर उत्तर दिया –''वस्तुत: मैं जीवतत्त्व हूँ और शुद्धात्म मेरा नाम है तथा मैं अपने स्वरूप चतुष्टय में रहता हूँ और मात्र जानना मेरा काम है।''

आचार्यश्री ने ज्ञान से ही पुन: प्रश्न किया –''तुमने अपना यह वस्तुगत अलौकिक परिचय क्यो दिया ? व्यक्तिगत लौकिक परिचय क्यों नहीं दिया ? क्या ऐसा परिचय देने से लोग तुम पर हंसेंगे नहीं ?''

ज्ञान ने गंभीर होकर विनम्रता से उत्तर दिया – ''महाराज ! मुझमें आपकी कृपा से इतना विवेक हो गया है कि कहाँ/किसको/क्या उत्तर देना चाहिए, इसकारण मैं हंसी का पात्र नहीं बन सकता।

चूंकि यह प्रश्न एक धर्मगुरु ने प्रवचन के बीच पूछा है। अत: मैंने सोचा –'आपको मुझसे इसी प्रकार के उत्तर की अपेक्षा थी।'

यदि यही प्रश्न मुझसे कॉलेज के प्रोफेसर ने किया होता या इनकमटैक्स ऑफिसर ने किया होता, तो उसे मैं अपना व्यक्तिगत लौकिक परिचय देता। उनसे कहता –'ज्ञान मेरा नाम है, दिल्ली में मेरा धाम है, मैं प्रोफेसर हूँ और पढाना-लिखाना मेरा काम है।'

पर यह परिचय तो केवल लोक में कामचलाऊ परिचय है, कदम-कदम पर झूठा पड़ने वाला परिचय है; क्योंकि लोकव्यवहार में केवल एक नाम से काम नहीं चलता, यहाँ तो क्षण-क्षण में और कदम-कदम पर नाम, काम, धाम और व्यक्तित्व बदलते रहते हैं।

देखिये न ! मैं कौन हूँ। इस प्रश्न के कितने उत्तर हो सकते हैं। मैं भारतीय हूँ, हिन्दी भाषी हूँ, मैं मनुष्य हूँ, मैं जैन हूँ, मैं प्रोफेसर हूँ, मैं विद्यार्थी हूँ, मैं आत्मार्थी हूँ, मैं बाप भी हूँ, बेटा भी हूँ, शिष्य भी हूँ, गुरु भी हूँ, भाई भी हूँ, भतीजा भी हूँ, भानजा भी हूँ, मामा भी हूँ आदि-आदि। जितने रिश्ते हैं, लोक व्यवहार में मैं वह सब हूँ।

हॉस्पिटल में मैं मरीज हूँ, बस में रेलगाड़ी में यात्री हूँ, दुकान पर ग्राहक हूँ, सभा में श्रोता हूँ। क्या-क्या गिनाऊँ। लोक में हर कदम पर और हर पल मेरा एक नया नाम रख दिया जाता है। जो हर पल बदले, वह मैं कैसे हो सकता हूँ। मैं तो कभी न बदलने

वाला ध्रुव आत्मतत्त्व हूँ।

जब तक परसापेक्ष परिचय दिया जायेगा, तब तक तो यही स्थिति रहेगी। यद्यपि लोक में काम चलाने की अपेक्षा यह परिचय भी ठीक है, पर यह परिचय वास्तविक-वस्तुगत परिचय नहीं है। यह सब तो संयोगी कथन है।

और आपको मेरे इस परिचय से क्या प्रयोजन हो सकता है? अत: मैंने आपको अपना वस्तुगत अलौकिक परिचय दिया है।

यही स्थिति मेरे नाम, काम और धाम की है, माता-पिता को मैं 'ज्ञानू' हूँ और मित्रों को 'ज्ञान'। समाज के लिए 'ज्ञानप्रकाशजी' हूँ और कॉलेज में 'प्रोफेसर ज्ञान जैन'।

इसीतरह मैं क्या बताऊँ कि मैं कहाँ रहता हूँ ? लोक में मेरा कोई एक ठिकाना तो है नहीं, कभी कहीं तो कभी कहीं। इसीतरह कोई एक निश्चित काम भी नहीं है, कभी कुछ करता हूँ, तो कभी कुछ। कभी पढता हूँ तो कभी पढाता हूँ।''

ज्ञान के अटपटे किन्तु युक्तिसंगत उत्तर सुनकर श्रोताओं को एक विचित्र-सी अनुभूति हुई थी। आचार्यश्री भी मन ही मन प्रसन्न हो रहे थे; क्योंकि वे जो स्पष्टीकरण रकरना चाहते थे, वह ज्ञान के उत्तरों से बहुत कुछ स्पष्ट तो हो ही चुका था। अत: उसी पर अपनी छाप लगाते हुए आचार्यश्री ने कहा -''देखो विज्ञान ! तुम भी वस्तुत: जैन नहीं, जीव हो; जैन तो इसलिए कहलाते हो कि तुमने जैन कुल में जन्म लिया है, यदि तुमने क्षत्रिय कुल में जन्म लिया होता तो तुम्हें जैन कौन कहता ? फिर तो तुम क्षत्रिय कहलाते न ? तुम भी अपने को क्षत्रिय मानने में ही अपना गौरव समझते। तुम्हें स्वयं भी जैनपना स्वीकृत नहीं होता।

इसीतरह तुम्हारा नाम भी वस्तुत: विज्ञान नहीं है, तुम्हारा वास्तविक नाम तो शुद्धात्म है, ज्ञायक है। विज्ञान तो तुम्हारे माता-पिता का रखा हुआ नाम है। काश चुन्नू, मुन्नू, कल्लू, मल्लू, पप्पू, सप्पू या बबलू, डबलू आदि नामों में से कोई एक नाम रख देते तो क्या तुम उसी नाम से नहीं पुकारे जाते ?

इसीप्रकार तुम वस्तुत: जयपुर में नहीं अपने स्वरूप में रहते हो और केवल जानने-देखने का काम करते हो, पठन-पाठन, धंधा-व्यापार और साइंस के प्रयोग करना तुम्हारा यथार्थ काम नहीं है।

यदि तुम वस्तुत: विज्ञान ही हो तो बताओ जब तुम्हारे माता-पिता ने यह नाम नहीं रखा था, तब भी तुम थे या नहीं ? और अगले जन्म में जब यह नाम नहीं रहेगा तब भी तुम रहोगे या नहीं ? यदि रहोगे तो तुम वस्तुत: विज्ञान केसे हो सकते हो ? तुम तो भगवान आत्मा हो, जो सदा सभी अवस्थाओं में रहता है तथा तुम्हारे ये काम-धाम जातियाँ व उपजातियाँ भी तो बदलती रहती है। अत: इन जातियों से भी आत्मा की पहिचान नहीं होती।''

आचार्यश्री समझा रहे थे और सभी श्रोता मंत्रमुग्ध होकर सुन रहे थे; क्योंकि उन्हें कभी ऐसी बातें सुनने को मिली ही नही थीं।

आचार्यश्री बोले -''हाँ तो मैं यह कह रहा था कि जो बातें बालक प्रारम्भ में सीख लेता है, उसे ही सब मान लेता है, तभी तो विज्ञान को केवल क्षणिक वर्तमान पर्याय का सत्य जो क्षण-क्षण में असत्य में बदलता रहता है, वह तो सत्य-सा लग रहा था और जो कभी न बदलने वाला ध्रुव स्वभावी त्रैकालिक सत्य है, वह सत्य नहीं लगता था।

यही तो वर्तमान शिक्षा का दोष है। अत: बालकों को लौकिक भौतिक विज्ञान की शिक्षा दिलाने के पूर्व या साथ-साथ तत्त्वज्ञान की शिक्षा एवं सदाचार के संस्कार भी देना चाहिए। हम लौकिक शिक्षा पढाने को मना नहीं करते, पर वह तो केवल जन्म की ही समस्या का समाधान देगी, वह भी भाग्योदय के साथ; पर तत्त्वज्ञान की शिक्षा तो जन्म-जन्मान्तर के दु:खों को दूर करने वाली शिक्षा है, अत: उस शिक्षा व संस्कारों की उपेक्षा कभी नहीं करनी चाहिए।

इसी तथ्य को ध्यान में रखकर प्राचीनकाल में शिक्षा के संबंध में यह रीति-नीति निर्धारित की गई होगी कि बालकों को सर्वप्रथम धार्मिक और आध्यात्मिक विद्या पढाई जावे, तदन्तर ही उसे अर्थकरी साहित्य, संगीत कला और विज्ञान तथा शस्त्रादि विद्यायें सिखाई-पढाई जावें, इसी वजह से पहले ''ओम् नम: सिद्धं'' से ही पढाई का प्रारम्भ होता था, जो बाद में बिगड़ते-बिगड़ते ''ओ ना मा सी धम'' हो गया। इसप्रकार शिक्षा के क्षेत्र में अध्यात्म विद्या नगण्य हो गई और उसका स्थान ईसाई संस्कृति ने ले लिया है। इसकारण लोग ''ओम नम: सिद्धम्'' का सही अर्थ ही भूलते जा रहे हैं। **(क्रमश:)**

लघु तीर्थ वंदना संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ दिगम्बर जैन तेरापंथी बडा मंदिर स्वाध्याय ग्रुप, जौहरी बाजार द्वारा दिनांक 22 जनवरी को सामूहिक तीर्थ वंदना का सुन्दर आयोजन रखा गया। प्रात: 7.30 बजे से रात्रि 11 बजे तक 55 यात्रियों के संघ द्वारा पूजन, भक्ति, धार्मिक गेम आदि सहित तत्त्वज्ञान का भरपूर लाभ लेते हुये किशनगढ, अजमेर, नारेली, मोजमाबाद एवं नरायना क्षेत्र के लगभग 10 प्राचीन जिनमंदिरों की वंदना की गई। सम्पूर्ण आयोजन डॉ.संजीवकुमारजी गोधा, श्री ओमप्रकाशजी एवं श्री विजयजी सौगानी आदि के सक्रिय सहयोग से सम्पन्न हुये।

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन स्थित पंचतीर्थ जिनालय का

पंचम वार्षिक महोत्सव

आमंत्रण पत्रिका

आचार्यकल्प पण्डितप्रवर श्री टोडरमलजी

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी

रविवार, 26 फरवरी से मंगलवार, 28 फरवरी, 2017 तक

सद्धर्मप्रेमी बन्धुवर,

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा फरवरी 2012 में ऐतिहासिक एवं भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन किया गया था। **महामहोत्सव की यादें सभी को पुन: ताजा हो जावें, इस हेतु पंचम वार्षिक महोत्सव रविवार 26 फरवरी से मंगलवार 28 फरवरी 2017 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।**

इस अवसर पर डॉ. हुकमचंद भारिल्ल कृत नवीनतम ***प्रवचनसार महामण्डल विधान*** का प्रथम बार आयोजन होगा। साथ ही विशिष्ट विद्वानों का प्रवचनों, प्रौढ कक्षाओं व गोष्ठियों के माध्यम से तत्त्वज्ञान का अपूर्व लाभ प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त नित्य–नियम पूजन, जिनेन्द्र भक्ति, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि का भी आयोजन होगा।

महोत्सव में सर्वश्री वज्रसेनजी दिल्ली, मंगलसेनजी दिल्ली, प्रमोदकुमारजी दिल्ली, मनीषजी जिनेन्द्रजी दिल्ली, सुरेशकुमारजी वकील ललितपुर, मुन्नालालजी ललितपुर, अनूप नजा ललितपुर आदि महानुभाव भी पधार रहे हैं।

ध्वजारोहण एवं उद्घाटन समारोह

रविवार, 26 फरवरी 2017 प्रात: 10.00 बजे से

ध्वजारोहणकर्त्ता –	श्री निहालचंदजी जैन 'पीतलफैक्ट्री वाले' जयपुर
वार्षिकोत्सव उद्घाटनकर्त्ता –	श्री नरेशजी लुहाड़िया, दिल्ली
मंडप उद्घाटनकर्त्ता –	श्री नितिनभाई सी. शाह, मुम्बई
मंच उद्घाटनकर्त्ता –	पण्डित शिखरचंदजी जैन, विदिशा
अध्यक्ष –	श्री विमलकुमारजी जैन 'नीरु केमिकल्स', दिल्ली
मुख्य अतिथि –	श्री कांतिभाई मोटानी, मुम्बई
विशिष्ट अतिथि –	श्री शांतिलालजी चौधरी भीलवाड़ा, श्री प्रकाशचंदजी छाबड़ा सूरत, चौधरी महेन्द्रकुमारजी भोपाल, श्री मुकेशजी जैन ढाईद्वीप इन्दौर
लिफ्ट उद्घाटनकर्त्ता –	श्री संजयभाई कोठारी, मुम्बई

विशेष कार्यक्रम

- आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के भवतापहारी सी.डी. प्रवचन
- आत्मार्थी विद्वानों के व्याख्यान का आयोजन
- ***श्री प्रवचनसार महामंडल विधान का आयोजन***
- जिनेन्द्र भक्ति संध्या
- नाटक (टोडरमल से टोडरमल स्मारक तक)
- राजस्थान जैन सभा के नवनिर्वाचित प्रतिनिधियों का सम्मान

इस मंगल महोत्सव में आप सभी सपरिवार इष्ट मित्रों सहित सादर आमंत्रित हैं।

विभिन्न कक्ष उद्घाटन समारोह

सोमवार, 27 फरवरी 2017 प्रात:

आचार्य कुन्दकुन्द कक्ष – श्री महेन्द्रकुमारजी राहुलजी गंगवाल, जयपुर
आचार्य अमृतचन्द्र कक्ष – श्री प्रेमचंदजी तन्मय–ध्याता बजाज, कोटा
आचार्य समन्तभद्र कक्ष – श्री एम.सी. जैन (एडजैलपेन वाले) मुम्बई

नवनिर्मित कार्यालय उद्घाटन समारोह

मंगलवार, 28 फरवरी 2017 प्रात:

उद्घाटनकर्त्ता – श्री चम्पालालजी भंडारी, बैंगलोर
मुख्य अतिथि – श्री अशोकजी जैन अरिहंत कैपिटल, इन्दौर
विशिष्ट अतिथि – श्री नरेन्द्र रहतोमलजी दिल्ली,

दैनिक कार्यक्रम

रविवार, दिनांक 26 फरवरी

प्रात:	5.15	आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी का सी.डी. प्रवचन
	6.30	गाथा पाठ एवं जिनवाणी चैनल पर डॉ. भारिल्लजी के प्रवचनों का प्रसारण
	7.00	मंगलकलश शोभायात्रा/स्थापना
	7.30	***श्री प्रवचनसार महामण्डल विधान***
	10.00	ध्वजारोहण, प्रवचन मण्डप उद्घाटन, उद्घाटन सभा समारोह
	10.45	प्रवचन : डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल
सायं	6.30	जिनेन्द्र भक्ति (पंचतीर्थ जिनालय)
	7.15	प्रवचन : विशिष्ट विद्वानों द्वारा
	8.00	सम्मान समारोह (राजस्थान जैन सभा के नवनिर्वाचित प्रतिनिधियों का)
	9.00	सांस्कृतिक कार्यक्रम – नाटक (टोडरमल से टोडरमल स्मारक तक)

सोमवार, दिनांक 27 फरवरी

प्रात:	5.15	आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी का सी.डी. प्रवचन
	6.30	गाथा पाठ एवं जिनवाणी चैनल पर डॉ. भारिल्लजी के प्रवचनों का प्रसारण
	7.00	***श्री प्रवचनसार महामण्डल विधान***
	10.00	प्रवचन : विशिष्ट विद्वानों द्वारा
	10.45	प्रवचन : डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल
सायं	6.30	जिनेन्द्र भक्ति (पंचतीर्थ जिनालय)
	7.15	प्रथम प्रवचन : विशिष्ट विद्वानों द्वारा
	8.00	द्वितीय प्रवचन : विशिष्ट विद्वानों द्वारा
	9.00	सांस्कृतिक कार्यक्रम – भक्ति संध्या

मंगलवार, दिनांक 28 फरवरी

प्रात:	5.15	आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी का सी.डी. प्रवचन
	6.30	गाथा पाठ एवं जिनवाणी चैनल पर डॉ. भारिल्लजी के प्रवचनों का प्रसारण
	7.00	***श्री प्रवचनसार महामण्डल विधान***
	10.00	प्रवचन : डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल
	11.00	महामस्तकाभिषेक
सायं	6.30	जिनेन्द्र भक्ति (पंचतीर्थ जिनालय)
	7.15	प्रवचन : विशिष्ट विद्वानों द्वारा

राजस्थान जैन सभा के नवनिर्वाचित प्रतिनिधियों का – सम्मान समारोह

रविवार, 26 फरवरी 2017 रात्रि 8.00 बजे से

अध्यक्ष –	श्री अशोकजी बड़जात्या, इन्दौर (राष्ट्रीय अध्यक्ष–दिग. जैन महासमिति)
मुख्य अतिथि –	श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी, जयपुर श्री राजेन्द्र के.गोधा (समाचार जगत), जयपुर
विशिष्ट अतिथि –	श्री कमलबाबू जैन, जयपुर (अध्यक्ष–राज.जैन सभा)

प्रवचनसार विधान आमंत्रणकर्त्ता

श्री इन्द्राचंदजी–सरोज कटारिया जयपुर
श्री सुरेशचंदजी अजीतजी वैभवजी तोतुका, जयपुर

मंगल कलश विराजमानकर्त्ता

श्रीमती मैना–नरेन्द्रकुमारजी जैन नॉवल्टी टेन्ट, जयपुर
श्री मदनलालजी बज परिवार, जयपुर
श्री कैलाशजी छाबड़ा, मुम्बई
श्रीमती रुचि–वरुणकुमार जैन रेवाड़ी

विद्वत् समागम

तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल
पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल
ब्र. यशपालजी जैन
पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील
डॉ. संजीवकुमारजी गोधा

विधानाचार्य

डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर,
पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर
एवं टोडरमल महाविद्यालय के समस्त विद्यार्थी

निवेदक

अध्यक्ष
श्री सुशीलकुमार गोदिका, जयपुर
महामंत्री
डॉ. हुकमचंद भारिल्ल, जयपुर
एवं समस्त ट्रस्टीगण
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

कार्यक्रम स्थल एवं संपर्क सूत्र – ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) फोन नं. (0141) 2705581, 2707458 E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

विशेष अनुरोध : आप कब, किस साधन से, कितने लोग जयपुर पधार रहे हैं, इसकी पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें, ताकि आपके आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था की जा सके।

विनम्र अनुरोध – इस पत्रिका को सभी लोग देख सकें ऐसे सार्वजनिक स्थान पर अवश्य लगा देवें।

स्वर्ण जयंती के मायने (18)

हमारा लक्ष्य बालकों में धार्मिक संस्कार : क्यों ?

– **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

लक्ष्य के निर्धारण और सही दिशा के बगैर हम कितना भी दौड़ें, सब व्यर्थ है। यदि हमें अपना यह जीवन सार्थक करना है तो सर्वप्रथम अपने लक्ष्य का निर्धारण करके सही दिशा में प्रयत्न करने होंगे।

लक्ष्यों के निर्धारण से पहिले बिताया गया जीवन समय की बर्बादी के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं, इसलिये **आवश्यक है कि जीवन के प्रारम्भ में ही, बचपन में ही हम अपने लक्ष्यों की सही पहिचान कर लें ताकि आगामी सम्पूर्ण जीवन तदनुसार सार्थकतापूर्वक जिया जा सके।** बस इसीलिये हमने बालकों को धार्मिक शिक्षण और संस्कार देने का काम अपने हाथों में लिया है; क्योंकि **आत्मकल्याण से श्रेष्ठ और इसके अतिरिक्त इस मानव जीवन का लक्ष्य और क्या हो सकता है ?**

सामान्यजन की मान्यता के विपरीत, **आत्मकल्याण और तदर्थ साधना कोई पार्टटाइम जॉब नहीं है और न ही यह कोई अशक्त वृद्धावस्था में करने योग्य कार्य है। यह उग्रपुरुषार्थ युक्त प्रक्रिया है, जिसके लिये पर्याप्त समय और सम्पूर्णत: सबलता जरूरी है, शारीरिक भी और मानसिक भी, इसलिये यह कार्य सशक्त किशोर एवं यौवनावस्था में किया जाना ही योग्य व श्रेष्ठ है। यह तभी संभव है जब हम अपने जीवन के प्रारम्भ में ही इस कार्य में जुट जाएं।** सभी लोग ऐसा कर सकें, **बस इसीलिये हमने बालकों में धार्मिक संस्कारों के सिंचन का यह कार्य अपने हाथ में लिया है।**

अबोध बालकों के चिन्तन को दिशा देने की जिम्मेदारी उनके माता-पिता, अभिभावकों, शुभचिंतकों और समाज की है। बालकों को उनके शैशव व बाल्यावस्था में जैसे संस्कार मिलते हैं, उनका आगामी जीवन तदनुरूप ही ढलता है। यदि हम अपने बालकों को बाल्यावस्था में धार्मिक संस्कार न दे पायें तो वे दिशाहीन ही रह जायेंगे, तब वे कहाँ जायेंगे और क्या करेंगे, कहा नहीं जा सकता है। उक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए यह अत्यंत आवश्यक है कि प्रारम्भ से ही उनके धार्मिक शिक्षण की व्यवस्था की जाये। **इस संबंधी सामाजिक जिम्मेदारी का निर्वाह करते हुए यह कार्य हमने अपने हाथों में लिया है।**

अपने-अपने बालकों के प्रति अपनी पारिवारिक जिम्मेदारी का निर्वाह करना आपकी जिम्मेदारी और कर्तव्य है। आइये हम सभी मिलकर यह कार्य सम्पन्न करें।

हम साहित्य प्रकाशन और पाठशालाओं का संचालन करके उनके शिक्षण की व्यवस्था करें, साधन जुटाएं और आप अपने बालकों को उन पाठशलाओं में लाकर, भेजकर उन्हें ऐसी शिक्षा का अवसर प्रदान करें। यदि हम अपने उक्त कर्तव्य का पालन करने में असफल रहते हैं तो **अपने ही बालकों का, अपने समाज के इन महत्वपूर्ण अंगों का जीवन उद्देश्यहीन व्यतीत होने व उनके भटकने की जिम्मेदारी मात्र हमारी होगी।**

जरा कल्पना तो कीजिये !

हम किसी कष्टदायी, असाध्य बीमारी से पीड़ित हों। हमारे नगर में उस बीमारी का विश्व प्रसिद्ध विशेषज्ञ डॉक्टर एक दिन के लिये आया हो, उसने अनेक लोगों का सफलतापूर्वक इलाज किया हो; पर हमें उसके चले जाने के बाद संध्याकाल में ही यह समाचार मिला हो, हमें समय पर पता ही नहीं चल पाया हो, तो क्या होगा, हमें कैसा लगेगा ?

क्या हमें अपने दुर्भाग्य पर बेहद अफसोस और खेद नहीं होगा ? पर चिड़ियों के खेत चुग जाने के बाद अब क्या हो सकता है ?

ठीक इसी प्रकार हम सभी लोग इस भवभ्रमण के भयंकर रोग से पीड़ित हैं। इस मानव जीवन में हमें इससे छुटकारा पाने का मार्ग भी उपलब्ध था और हमारे पास उसे अपनाने के लिये सभी अनुकूलताएं भी थीं पर सारा जीवन यूं ही निकल गया और हमें पता ही नहीं चल पाया। अब बुढापे में जब हम शक्तिहीन हो गये, हमारी सारी इन्द्रियाँ शिथिल हो गईं, आँखों से दिखता नहीं, कानों से सुनाई नहीं देता, कमरदर्द के कारण बैठा नहीं जाता, तब हमें पता चले कि अहो ! इस भवभ्रमण से छूटने का अचूक उपाय तो उपलब्ध है, पर अब क्या किया जा सकता है ? अब हमारे पास न तो समय ही शेष रहा और न ही शक्ति।

बतलाइये तब क्या होगा ?

घोर अफसोस ! अरे मात्र अफसोस ही नहीं, अब आगे फिर अनंतकाल तक भ्रमण की कठोर सजा भी। अब कौन जाने ऐसा अवसर दुबारा कब मिले।

यदि हमें अपने बचपन में ही यह मार्ग मिल गया होता तो क्या हम अपनी वर्तमान भूमिका के अनुरूप सामान्य जीवन जीते हुए भी क्या अपने इस जीवन में भवभ्रमण से छूटने का उपाय न कर लेते ? कुछ कदम ही सही, क्या हम भी इस मोक्षमार्ग पर आगे नहीं बढ गये होते ?

अब कभी किसी को पश्चाताप के इस दौर से न गुजरना पड़े, बस इसीलिये हमने बालकों में धार्मिक संस्कारों के बीजारोपण का यह पवित्र कार्य अपने हाथों में लिया है।

यदि हमारे पास कोई वस्तु हो और तत्काल उसका हमारे लिये कोई उपयोग न हो तो हम उसे भविष्य में उपयोग करने के लिये सुरक्षित रख सकते हैं; पर समय के साथ ऐसा नहीं है, **यदि हमें आज उपलब्ध समय का हमारे लिये कोई उपयोग नहीं है तो हम उसे कल के लिये संग्रहीत नहीं कर सकते हैं, वह तो अनुपयुक्त ही नष्ट हो जायेगा।** यदि हम अपने वर्तमान और भावी सम्पूर्ण समय का सही उपयोग करना चाहते हैं तो हमारे पास उसके उपयोग की रूपरेखा पहले ही तैयार होनी चाहिये। इसीलिये मैं कहता हूँ कि **जीवन का लक्ष्य निर्धारित हुए बिना व्यतीत समय व्यर्थ ही**

वक्त की बर्बादी के सिवाय और कुछ नहीं है।

बालक समय रहते बाल्यावस्था में ही आत्मकल्याण को अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर सकें, लक्ष्यहीनता की स्थिति में उनके जीवन का अमूल्य समय व्यर्थ ही नष्ट न हो, बस इसीलिये बालकों में धार्मिक संस्कारों के बीजारोपण को हमने अपना उद्देश्य बनाया है।

हीरा हालांकि जमीन में गड़ा हुआ मिलता है, बिलकुल बिना मूल्य, मुफ्त ही; पर मात्र इसलिये कोई कौए उड़ाने के लिये उनका उपयोग करके उन्हें नष्ट नहीं कर देता है। बिना मूल्य चुकाए मिला हुआ हीरा अमूल्य ही होता है। इसी प्रकार **यह दुर्लभ मानव जीवन भले ही हमें बिना कोई मूल्य चुकाए मुफ्त ही मिल गया है पर यह अमूल्य है, हमें इसे यूं ही व्यर्थ ही नष्ट नहीं करना चाहिये वरन् इसके प्रत्येक समय का उपयोग आत्मकल्याण में करना चाहिये।**

हम सभी और हमारे बालक भी ऐसा कर सकें, बस इसीलिये बालकों में धार्मिक संस्कारों के सिंचन के कार्य को हमने अपने जीवन का लक्ष्य बनाया है।

यदि हम अपने बालकों को इन धार्मिक संस्कारों से वंचित रखते हैं तो यह हमारा उनके प्रति अपराध और अन्याय है ही वरन् यह स्वयं अपने लिये भी घातक है। यदि आप कल्पना नहीं कर सकते हों तो अपने आसपास निगाह डालकर ही देख लीजिये, आपको सैंकड़ों ऐसे उदाहरण मिल जायेंगे जहाँ विचार विभिन्नता के कारण लोग अपना जीवन कलह में उलझकर नष्ट कर रहे हैं।

यदि हमारे बालकों को ये संस्कार न मिले और वे इस मार्ग पर न लगे तो हमारी अशक्त वृद्धावस्था में वे हमारी आत्मसाधना में सहयोगी नहीं बनेंगे; हो सकता है वे बाधक ही बनने लगें। कहीं ऐसा न हो, इसके लिये आवश्यक है कि **वे हमसे सहमत हों, अपने इस जीवनयात्रा और मोक्षमार्ग में हमारे हमराही हों; ताकि वे स्वयं अपने कल्याण के मार्ग पर तो अग्रसर हों ही इस कार्य में हमारे सहयोगी भी बनें। बस इसीलिये बालकों में धार्मिक संस्कारों के सिंचन को हमने अपना लक्ष्य बनाया है।**

तीर्थंकरों, गणधरों व आचार्यों के माध्यम से आत्मकल्याण का जो मार्ग हमें मिला है, वह हमारे पास उनकी विरासत है, इसे आगामी पीढियों को सौंपकर जाना हमारी जिम्मेदारी है। आज तक हमारे पूर्वज यही करते आये हैं, इसीलिये आज यह मार्ग हमें मिला है और अब हमें भी यही करना होगा। बस इसीलिये बालकों में धार्मिक संस्कारों के सिंचन को हमने अपना लक्ष्य बनाया है। सुसंस्कारों के अभाव में जगत की धन-सम्पत्ति नहीं विपत्ति बन जाती है; क्योंकि वह हमें व्यसनों की ओर धकेलने लगती है, हमारी ही सम्पत्ति हमारे लिये विपत्ति नहीं बन जाये **बस इसीलिये बालकों में धार्मिक संस्कारों के सिंचन को हमने अपना लक्ष्य बनाया है।**

बालक कोमलमति होते हैं, वे हमारे अनुगामी होते हैं, हमारा अनुसरण करते हैं, हम जैसा चाहें उन्हें ढाल सकते हैं। एक बार परिपक्व होने पर उनके मस्तिष्क में अन्य संस्कारों के जड़ें जमा लेने पर हो सकता है वे हमसे सहमत न भी हों, हमारी बातों पर ध्यान ही न दें, ऐसा करना असंभव ही हो जाये। ऐसा कुछ भी हो, उनका जीवन किसी अन्य दिशा में आगे बढ पाए उससे पहले ही उनमें धार्मिक संस्कारों का सिंचन किया जा सके, **बस इसीलिये बालकों में धार्मिक संस्कारों के सिंचन को हमने अपना लक्ष्य बनाया है।**

सबसे महत्वपूर्ण एक बात और; हम अपने बालकों को जो धन-सम्पत्ति या उच्च लौकिक शिक्षा देंगे वह अधिकतम एक भव तक ही उनके काम आयेगी; पर हमारे द्वारा प्रदत्त धार्मिक संस्कार जन्म-जन्मांतर तक और अनंतकाल तक उनके साथ रहेंगे, वे उन्हें सिद्धशिला तक ले जायेंगे। हालांकि हमने यह काम अपने हाथों में लिया है और इसे करने के लिये हम सम्पूर्ण समर्पण के साथ जुटे हुए हैं; पर आपके सक्रिय सहयोग के बिना यह संभव नहीं है, यदि वे हमारे पास आयें ही नहीं तो हम क्या कर लेंगे ?

हम आपसे अपेक्षा करते हैं कि अपने बालकों को पाठशालाओं में भेजें, स्वयं उन्हें साथ लेकर आयें। बालोपयोगी सत्साहित्य अपने घरों में लायें, बच्चों को उसे पढने के लिये प्रोत्साहित करें, स्वयं पढाएं। खेल-खेल में ही उन्हें धार्मिक संस्कार और शिक्षा प्रदान करें। इसप्रकार स्वयं अपने सुखी जीवन और आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त करें। ●

वार्षिकोत्सव संपन्न

छिन्दवाड़ा (म.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल एवं अ.भा. जैन युवा फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में नई आबादी गांधीगंज स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनालय का 13वाँ वार्षिक महोत्सव दिनांक 22 जनवरी को मनाया गया।

इस अवसर पर श्रीजी के प्रक्षाल के उपरान्त जिनालय पर ध्वजारोहण कर श्री नेमिनाथ पंचकल्याणक विधान किया गया एवं शोभायात्रा निकाली गई। कार्यक्रम में श्री जे.के. जैन (कलेक्टर) सहित सैंकड़ों साधर्मियों ने उपस्थित होकर लाभ लिया।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

1 से 6 फरवरी	दीवानगंज-भोपाल	पंचकल्याणक
12 व 13 फरवरी	हस्तिनापुर	चिदायतन शिलान्यास
26 से 28 फरवरी	जयपुर	वार्षिकोत्सव एवं स्वर्ण जयन्ती समापन समारोह
3 मार्च	जयपुर	विदाई समारोह
5 से 12 मार्च	रामाशाह दि.जैन मंदिर मल्हारगंज, इन्दौर	समयसार विधान
2 से 9 अप्रैल	आत्मसाधना केन्द्र दिल्ली	शिविर,कन्या निकेतन का दीक्षान्त समारोह, विज्ञान वाटिका पुरस्कार वितरण एवं उपकार दिवस
24 से 28 अप्रैल	देवलाली-नासिक	आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी जयन्ती
21 मई से 7 जून	खनियांधाना (म.प्र.)	प्रशिक्षण शिविर

2 फरवरी 2017, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

मुम्बई में डॉ. भारिल्ल के प्रवचन

मुम्बई : यहाँ जवेरी बाजार स्थित सीमन्धर जिनालय में दिनांक 14 से 16 जनवरी 2017 तक तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंद भारिल्ल द्वारा प्रवचनसार की गाथा 99 पर प्रवचनों का लाभ मिला। इस अवसर पर अनेक साधर्मियों ने पधारकर तत्त्वज्ञान का लाभ लिया।

वैराग्य समाचार

(1) शिकागो (अमेरिका) निवासी श्री निरंजन सी. शाह का दिनांक 28 दिसम्बर 2016 को 74 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप शिकागो मुमुक्षु मण्डल के आधार स्तम्भ एवं **JAANA** के प्रमुख थे। आपने शिकागो जैन मंदिर, शिकागो जैन सेन्टर एवं **JAINA** को बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। आपने 44 वर्ष की आयु में इंजिनियरिंग से सेवानिवृत्ति लेकर स्वाध्याय में समय व्यतीत किया।

(2) मुम्बई निवासी श्रीमती तेजप्रभा बड़जात्या ध.प. श्री उम्मेदमलजी बड़जात्या का दिनांक 22 जनवरी को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

ज्ञातव्य है कि आप दादर-मुम्बई मुमुक्षु मण्डल के आधार स्तम्भ श्री कमलजी बड़जात्या की माताजी थीं। टोडरमल स्मारक से चलने वाली गतिविधियों में सदैव आपका सक्रिय सहयोग रहा। आपकी स्मृति में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट हेतु 11 हजार रुपये प्राप्त हुये; एतदर्थ धन्यवाद।

(3) ललितपुर (उ.प्र.) निवासी श्रीमती भागवतीबाई धर्मपत्नी श्री गुलाबचंदजी का दिनांक 20 जनवरी 2017 को 91 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल व पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल की बड़ी बहिन थीं।

(4) खतौली (उ.प्र.) निवासी श्री नरेन्द्रजी सर्राफ का दिनांक 20 जनवरी को 78 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन-पीसनोपाडा के अध्यक्ष एवं कुन्दकुन्द एज्युकेशन एसोसियेशन के अध्यक्ष थे।

(5) दिग. जैन महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोकजी बड़जात्या और मुमुक्षु समाज इन्दौर के अध्यक्ष श्री विजयजी बड़जात्या की माताजी **श्रीकमलप्रभा बड़जात्या** का दिनांक 29 जनवरी को 86 वर्ष की आयु में अकस्मात् देहपरिवर्तन हो गया है। आप गहन तत्त्वाभ्यासी थीं। आज पूरे परिवार में धार्मिक संस्कारों का श्रेय आपको ही जाता है।

(6) हाथरस (उ.प्र.) निवासी श्री रतनलालजी चांदवाड़का दिनांक 19 दिसम्बर.16 को शांतभावोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 550-550/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

(पृष्ठ 1 का शेष...)

स्थान पर शास्त्री प्रथम वर्ष रही। **स्लो साइकिल प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान पर आकाश हलाज (उपाध्याय वरिष्ठ) तथा द्वितीय स्थान पर समर्थ जैन (उपाध्याय वरिष्ठ) रहे। **तस्तरी फेंक प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान पर आकाश हलाज (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं द्वितीय स्थान पर सागर पाटील रहे। **लम्बी कूद प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान पर आयुष जैन (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं द्वितीय स्थान पर अक्षय साम (शास्त्री द्वितीय वर्ष) रहे। **गोला फेंक प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान पर आयुष जैन (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं द्वितीय स्थान पर आकाश जैन रहे। **शतरंज प्रतियोगिता** प्रथम स्थान पर अमन जैन (शास्त्री प्रथम वर्ष) एवं द्वितीय स्थान पर समर्थ जैन (उपाध्याय वरिष्ठ) रहे। **कैरम प्रतियोगिता (एकल)** में प्रथम स्थान पर चर्चित जैन एवं द्वितीय स्थान पर श्रेणिक जैन (शास्त्री प्रथम वर्ष) रहे।**कैरम प्रतियोगिता (युगल)** में प्रथम स्थान पर मंथन जैन व अक्षय साम (शास्त्री द्वितीय वर्ष) एवं द्वितीय स्थान पर आयुष जैन व प्रतीक जैन रहे। **बैडमिंटन प्रतियोगिता (एकल)** में प्रथम स्थान पर मंथन जैन (शास्त्री द्वितीय वर्ष) एवं द्वितीय स्थान पर संभव जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) रहे। **बैडमिंटन प्रतियोगिता (युगल)** में प्रथम स्थान पर मंथन जैन व अक्षय जैन एवं द्वितीय स्थान पर चर्चित जैन व पीयूष जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष) रहे।

सभी प्रतियोगिताओं का संयोजन शास्त्री तृतीय वर्ष द्वारा हुआ। इस प्रकार संपूर्ण कार्यक्रम अत्यंत सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। ●

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

प्रकाशन तिथि : 28 जनवरी 2017

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com